# शोधमाला

# SHODHMALA

अंक 26-27



सम्पादक

डॉ. राम अवध

'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' के गीतों में सामाजिक यथार्थ - *डॉ. राम किशोर यादव* 124-128
मुक्ति पाने के लिए योद्धा बनना पड़ता है... - *डॉ. आशीष कुमार 'दीपांकर'* 129-131
दलित पत्रकारिता के दस्तावेजीकरण में श्यौराज सिंह 'बेचैन'... - *डॉ. वंदना* 132-136
श्यौराज सिंह 'बेचैन' की रचनाओं में दलित संघर्ष - *डॉ. गुड़िया चौधरी* 137-139

## शोधार्थियों की नजर में...

मेरा बचपन मेरे कन्धों पर में ग्रामीण भारतीय सामाजिकता - *मिथिलेश कुमार* 140-144
एक व्यक्ति नहीं, पूरी दलित चेतना हूँ - *रश्मि नरताम* 145-155
जिंदगी के मुकम्मल व्याकरण को पेश करती कविताएँ - *आबिद हुसैन* 156-158
पितृ संरक्षण से वंचित एक दलित बच्चे की संघर्ष गाथा - *निवेदिता* 159-161
'भोर के अंधेरे में' : भाव, भाषा और विचार - *अक्षय सभरवाल* 162-165
'भरोसे की बहन' कहानी संग्रह में दलित चेतना - *रेनू* 166-168
दलित स्त्री के अतीत, वर्तमान और भविष्य का मुक्तिगान - *रूबी* 169-171
'इस सादगी पे कौन न मर जाए ऐ खुदा' - *राजा कुमार* 172-173
श्यौराज सिंह 'बेचैन' की कहानियों में संविधान सापेक्ष सामाजिक... - *पूर्विका अत्री* 174-177
श्यौराज सिंह 'बेचैन' के लेखन में दलित प्रश्न - *मनीष साव* 178-182
दलित आलोचना के नए प्रतिमानों की तलाश - *मनोरंजन कुमार* 183-186
अपनी जड़ों से जुड़ी कहानियाँ - *कीर्ति* 187-191

## संस्मरण

उन दिनों श्यौराज - *शांति यादव* 192-194
बुरा-भला श्यौराज - *डॉ. रजत रानी मीनू* 195-200
श्यौराज सिंह 'बेचैन' : अच्छे दिन की उम्मीद में - *बजरंग बिहारी तिवारी* 201-202
साहित्यकार के साथ-साथ - *अनुज कुमार* 203-210

## साक्षात्कार

प्राइवेटाइजेशन की वजह से असंतुलन गहरा होता जा रहा है 211-217
अस्मिता विमर्श हमारी पहचान को रेखांकित करता है 218-227
चित्र विथिका